आत्मनिर्भर भारत एवं रोजगार के अवसर

(Self-reliant India and Opportunities of Employment)

डॉ० एम. एल. सोनी

प्राचार्य एवं संरक्षक

श्री नागेन्द्र सिंह यादव

संपादक

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीना

जिला सागर (म.प्र.)

स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

दिल्ली-110053

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

आत्मनिर्भर भारत एवं रोजगार के अवसर

श्री नागेन्द्र सिंह यादव
संपादक

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२१
ISBN 978-93-92611-14-8

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Aatmnirbhar Bharat evam Rojgar ke Avsar
Edited by Shri Nagendra Singh Yadav

अनुक्रमणिका

1. मध्यप्रदेश में रोजगार एवं रोजगार से संबंधित सरकार की योजनाएं 11
नागेन्द्र सिंह यादव

2. स्वरोजगार के माध्यम से देश के विकास में योगदान 24
डॉ. नम्रता जैन

3. ग्रामीण भारत में रोजगार : अवसर एवं चुनौतियाँ 33
उमा शंकर तिवारी

4. नारी शिक्षा का ग्रामीण विकास के क्षेत्र में योगदान 41
डॉ. रत्नेश कुमार जैन

5. युवा सशक्तिकरण और आत्मनिर्भर भारत 52
कु. दीपिका दीक्षित

6. ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार- मधुमक्खी पालन आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम 63
संगीता तोमर[1] , निशा सिंह तोमर[2] पूजा सिंह सिकरवार[3]

7. भारत के आर्थिक विकास में महिलाओ की भूमिका 71
विशेष चौधरी

8. कोरोना प्रभावित अर्थव्यवस्था में जान फूँकता आत्मनिर्भर भारत अभियान: एक आर्थिक विश्लेषण 78
डॉ. असलम खान

9. आत्मनिर्भर भारत में महिलाओं की भागीदारी 99
कु. सपना मीना

10. रोजगार में महिलाओं की भूमिका 107
दीपक कुमार मलिक

11. सिविल सर्विस के क्षेत्र में रोजगार के अवसर 113
डॉ. ए. के. जैन

Scanned by CamScanner

12. आत्मनिर्भर भारत : देश में रोजगार की असीम सम्भावनाए 118
डॉ. कृष्णा राय चैहान
13. कोरोना वायरस का विद्यार्थी जीवन पर प्रभाव 126
धर्मेन्द्र सिंह
14. भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग में रोजगार की स्थिति एवं संभावनाऐं 134
डॉ0 कवलजीत कौर, डॉ0 कल्पना जोशी
15. भारत में महिला श्रम की भागीदारी 141
डॉ. ममताधाकड़
16. रोजगारमूलक शिक्षा 148
डॉ. शैलेष कुमार पाण्डेय
17. वर्तमान परिदृश्य में रोजगारोन्मुख शिक्षा की आवश्यकता 155
विनय कुमार
18. पर्यावरण एवं औद्योगीकरण के प्रभाव से कलुषित होता जनमानस 161
आशीष राठौर
19. गृह विज्ञान मे रोजगार के अवसर 171
डॉ प्रियंका गेहलोत
20. रोजगार के लिए सरकार की विभिन्न योजनाएँ: मध्यप्रदेश के संदर्भ में 177
डॉ. एस.बी. विश्वकर्मा, कु. आकृति खरे
21. आत्मनिर्भर भारत में कौशल विकास की भूमिका 182
रीना राठौर
22. Vermicomposting: The Use of Earthworms to Convert Organic Waste into Natural Fertilizer at Low Cost 191
Dr. Ritu Sharma
23. Aatmanirbhar Bharat and Women's Economic Empowerment 204
Dr. Reema Sharma
24. The history of women's work and wages and how it has created success for us all 216

भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग में रोजगार की स्थिति एवं संभावनाएं

डॉ0 गगनजीत कौर
ग्रीष्मकालीन संविदा शिक्षक
समाजशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय, चम्पावत (उत्तराखण्ड)
9758961089, 9997259649

डॉ0 कल्पना जोशी
गेस्ट प्रवक्ता
समाजशास्त्र विभाग
स्व. चंद्र सिंह शाही राजकीय महाविद्यालय कपकोट (बागेश्वर) उत्तराखण्ड
7409243214

प्रस्तावना- भारतीय अर्थव्यवस्था मे सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों का स्थान प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण रहा है। हमारे यहां खादी, हथकरघा, हस्तशिल्प, शिल्प उत्पादन, कॉपर जैसे परम्परागत लघु उद्योग रहे है। हमारे हथकरघा निर्मित वस्त्रों एवं सिल्क के कपड़ों का पूरा विश्व मुरीद रहा है। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने हेतु गांवों में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों की स्थापना पर बल दिया करते थे। उनका मानना था कि गांवों के विकास के लिए घरेलू उद्योग का विकास स्वतंत्र इकाइयों के रूप में किया जाना आवश्यक है। राष्ट्रीय विकास की योजना बनाने एवं क्रियान्वित करने के लिए 1950 में योजना आयोग का गठन किया गया था जिसने स्पष्ट किया कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग हमारी अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग है जिनकी कभी भी उपेक्षा नही की जा सकती है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमो (एमएसएमई) को ज्यादातर वैश्विक अर्थव्यावस्थाओं का आधार माना जाता है। सभी इनके व्यापक योगदान को स्वीकार करते है जो समाज के सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और प्रौद्योगिकीय आयामों तक फैला हुआ है। इसके अलावा सभी इस बात को

मानते है कि एमएसएमई को वित्त प्राप्त करने के लिए सभी जगह बाधाओं का सामना करना पड़ता है। आईएफसी/मैकिंसी ने दुनिया भर में औपचारिक और अनौपचारिक एमएसएमई के क्रेडिट अंतराल का अनुमान लगाया है जो वैश्विक रूप से 3.9 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर है जिसमें से 2.1 से 2.6 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर उभरते हुए बाजारों में है।

एमएसएमई की परिभाषा- भारत में एमएसएमई की व्याख्या संयंत्र एवं मशीनरी (भूमि और भवन को छोड़कर) में निवेश के आधार पर की जाती है जो अन्य ज्यादातर देशों में उत्पादन/रोजगार आधारित मानदंड से बिल्कुल अलग है।

श्रेणी	विनिर्माण (रूपये में) (संयंत्र एवं मशीनरी में निवेश)	सेवाऐं (रूपये में) (उपकरण में निवेश)
सूक्ष्म	25 लाख से अधिक नहीं	10 लाख से अधिक नहीं
लघु	25 लाख से अधिक किन्तु 5 करोड से कम	10 लाख से अधिक किन्तु 2 करोड से कम
मध्यम	5 करोड से अधिक किन्तु 10 करोड से कम	2 करोड से अधिक किन्तु 5 करोड से कम

भारत के विनिर्माण उत्पाद में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की भूमिका- चैथे एमएसएमई सर्वेक्षण (2006-07) और छठे आर्थिक सर्वेक्षण (2013) के आधार पर, केन्द्रीय एमएसएमई मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट (2016-17) में अनुमान लगाया गया है कि भारत में 5.13 करोड़ एमएसएमई है जिनमें 11.1 करोड़ लोग रोजगाररत है। चैथे एमएसएमई सर्वेक्षण यह बताता है कि लगभग 90 प्रतिशत एमएसएमई निधीयन के अनौपचारिक स्त्रोतों पर निर्भर है। भारत के विनिर्माण उत्पादन औ एमएसएमई सकल मूल्यवर्धन में एमएसएमई का योगदान निम्न तालिका में वर्णित है-

भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग की स्थिति एवं रोजगार सृजन

देश में बेरोजगारों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। कृषि प्रधान देश की सीमित खेती योग्य भूमि का अंशधारक बेरोजगारों का बोझ नहीं सम्भाल सकती है। सरकारी स्तर पर नौकरियाँ उद्योग की व्यवस्था करने की क्षमता भी नहीं लगती है। ऐसी स्थिति में हर हाथ को काम देने के लिए उद्योगों का विकास उपयुक्त रणनीति हो सकती है। आजादी के बाद सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के विकास के लिए अत्यधिक प्रयास किये गया वर्ष 1948 में देश में कुटीर उद्योग बोर्ड की स्थापना हुई तथा प्रथम पंचवर्षीय योजना काल में इनके विकास हेतु 42 करोड़ रुपए की राशि खर्च की गई। फिर 1956, 1977, 1980 एवं 1991 की औद्योगिक नीतियों की उद्घोषणाओं में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसके लिए शुरू उपायों से लघु उद्योगों की प्रगति हुई तथा इससे देश में बेरोजगारी दूर करने तथा अर्थव्यवस्था को सुधारने में काफी मदद मिली है।

देश में पंजीकृत तथा कार्यरत लघु औद्योगिक इकाइयों की गणना पहली बार 1972 में पूर्ण हुई जिसमें 1.40 लाख इकाइयों की गणना की गई थी। वर्तमान गणना 15 वर्ष बाद 1988 में सम्पन्न हुई जिसके अनुसार देश में 5.82 लाख इकाइयाँ कार्यरत है। 15 वर्षों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उत्पादन, रोजगार, व अन्य दृष्टि से लघु औद्योगिक क्षेत्र ने उच्च वृद्धि दर प्राप्त की है। इससे वर्ष 1972-73 में 16.53 लाख लोगों को रोजगार मिला था। वह वर्ष 1987-88 में बढ़कर 36.66 लाख तक पहुँचा। निर्यात में भी वृद्धि की दर अधिक रही है। वर्ष 1972-73 में 127 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया था जो वर्ष 1987-88 में बढ़कर 2495 करोड़ रुपये हो गया। वर्ष 1994-95 की इकाइयों की संख्या 79.6 लाख थी जबकि 2001-02 में ये संख्या बढ़कर 105.21 लाख हो गई। इसी प्रकार रोजगार की संख्या वर्ष 1994-95 हेतु 191.40 लाख से वर्ष 2001-02 के लिए 249.33 लाख पाई गई थी। वर्ष 2006-07 में सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्योग की चौथी अखिल भारतीय गणना की रिपोर्ट को देखें तो वर्ष 2006-07

के लिए उद्योगों की संख्या 361.76 लाख बताई गई है एवं रोजगार [illegible] संख्या 805.23 लाख बताई गई है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग का कार्य निष्पादन, रोजगार, निवेश और सकल उत्पाद

क्रम संख्या	वर्ष	कुल कार्यरत उद्यम (लाख में)	रोजगार (लाख में)	स्थिर परिसम्पत्तियों का बाजार मूल्य (करोड़ रुपए में)
1	2	3	4	5
1	2001–02	105.21	249.33	154349.00
2	2002–03	109.49	260.21	162317.00
3	2003–04	113.95	271.42	[illegible]
4	2004–05	118.59	282.57	178699.00
5	2005–06	123.42	294.91	[illegible]
6	2006–07	361.76	805.23	868543.79
7	2007–08	377.36	842.00	920459.84
8	2008–09	393.70	880.84	977114.72
9	2009–10	410.80	921.79	1038546.08
10	2010–11	428.73	965.15	1105934.09
11	2011–12	447.66	1011.80	[illegible]
12	2012–13	467.56	1061.52	[illegible]

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र की मुख्य विशेषताओं का राज्य/संघ राज्य क्षेत्रवार वितरण

क्र. सं.	राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	उद्यम (लाख में)	रोजगार (लाख में)	स्थिर परिसम्पत्तियों का बाजार मूल्य (करोड़ रुपए में)
1	जम्मू और कश्मीर	1.53	3.27	8475.22
2	हिमाचल प्रदेश	1.72	2.92	5539.22
3	पंजाब	12.14	18.31	27128.65
4	चंडीगढ़	0.26	0.79	607.65
5	उत्तराखंड	2.25	4.52	9014.33
6	हरियाणा	3.25	12.23	22393.25
7	दिल्ली	1.73	6.12	10154.54
8	राजस्थान	9.61	13.42	25482.90
9	उत्तर प्रदेश	24.21	53.30	56191.00
10	बिहार	7.50	17.43	8403.45
11	सिक्किम	0.07	0.57	72.15
12	अरुणाचल प्रदेश	0.23	0.86	907.49
13	नागालैंड	0.13	1.17	1270.57
14	मणिपुर	0.45	1.58	546.63
15	मिजोरम	0.10	0.56	455.14
16	त्रिपुरा	0.23	0.76	881.73
17	मेघालय	0.50	1.17	490.55
18	असम	2.34	4.92	8041.15
19	पश्चिम बंगाल	21.20	53.53	38403.22
20	झारखंड	4.41	9.10	5620.72

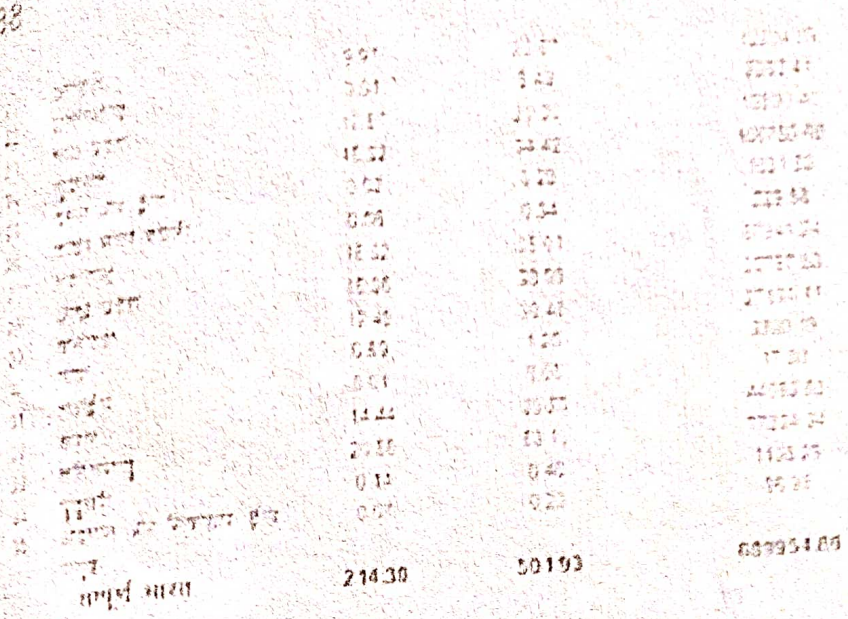

योजना काल में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग-

पंचवर्षीय योजनाओं में लघु एवं कुटीर उद्योगों को उनके महत्व के अनुरूप उचित स्थान प्रदान किया गया है। योजनाओं के अंतर्गत कुटीर लघु उद्योगों के विकास कार्यक्रम तथा प्रगति का विवरण निम्न है-

प्रथम पंचवर्षीय योजना- लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास पर 43 करोड़ रूपये व्यय किये गये। जून 1955 में कर्वे समिति गठित की गयी जिसने उद्योगों के विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत किये।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना- इसमें कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास पर लगभग 180 करोड़ रूपये व्यय किये गये। इस अवधि में 56 औद्योगिक बस्तियों का निर्माण किया गया। 1959-60 में औद्योगिक सहकारिताओं की संख्या 29000 हो गयी जिसमें 11,200 हैडलूम बुनकर समितियाँ थी। गांवों में चलाये जाने वाले उद्योगों को विशेष सहायता दी गयी।

तृतीय पंचवर्षीय योजना- इसमें उद्योगों के तीव्र विकास तथा सुधार का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। इस संदर्भ में सार्वजनिक क्षेत्र में 240.75 करोड़ रूपये व्यय किये गये। योजना अवधि में इन उद्योगों के विकास हेतु बहुआयामी कार्यक्रम निर्धारित किये गये।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना- इसमें उद्योगों के विकास पर 242.5 करोड़ रूपये व्यय किये गये। इस काल में इन उद्योगों को और अधिक क्षेत्रों में विस्तार करने का प्रयास किया गया।

पांचवी पंचवर्षीय योजना- इसमें उद्योगों के विकास पर 592.6 करोड़ रूपये व्यय किये गये। इस योजना में हथकरघो के आधुनिकीकरण तथा पावरलूम आदि पर विशेष ध्यान दिया गया।

छठी पंचवर्षीय योजना- इसमें कुटीर तथा लघु उद्योगों को राष्ट्रीय विकास नीति के महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकार किया गया तथा इसके विकास को उच्च प्राथमिकता प्रदान की गयी। इस योजना काल में कुटीर तथा लघु उद्योगों के विकास हेतु एक विशेष कार्य योजना बनायी गयी जिसके अन्तर्गत प्रयास की गयी।

सतवीं पंचवर्षीय योजना- इसके प्रारम्भ में प्रपत्र में स्वीकार किया गया कि उत्पादन, रोजगार तथा निर्यात की दृष्टि से ग्रामीण तथा लघु उद्योगों की अर्थव्यवस्था के अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग के रूप में विशेष स्थान है। अतः इस क्षेत्र के विकास की नीतियों को वित्तीय एवं करों की दृष्टि से उदार तथा प्रबंध व्यवस्था की दृष्टि से कुशल बनाया जाना चाहिए।

आठवीं पंचवर्षीय योजना- इसमें ग्राम एवं लघु उद्योगों के विकास पर कुल 6334.2 करोड़ रूपये किये गये। इस योजना में ग्राम रोजगार तथा ग्रामीण औद्योगीकरण पर विशेष बल दिया गया।

नौवीं पंचवर्षीय योजना- इसके प्रारम्भिक वर्ष 1997-98 में इन उद्योगों के विकास हेतु 1813.9 करोड़ रूपये व्यय किया गया। इसी तरह 1988-89 में 1776.7 करोड़ रूपये, 1999-2000 में 1746.6 करोड़ रूपये तथा 2000-01 में 900.5 करोड़ रूपये तथा 2001-02 में 1842 करोड़ रूपये व्यय किये गये।

निष्कर्ष- आज जब भारत की जनसंख्या का 62 प्रतिशत हिस्सा 15-59 वर्ष के आयु वर्ग का है एवं वर्ष 2020 में भारत की औसत आयु 29 वर्ष हो गई है। ऐसे में वृहद पैमाने पर स्थायी रोजगारी के सृजन की आवश्यकता है और रोजगार के सृजन हेतु विनिर्माण क्षेत्रक की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है, लेकिन हमारे देश में विनिर्माण क्षेत्रक के विषय में सबसे बड़ी बाधा है पूंजी निवेश का अभाव। वित्तीय घाटे की समस्या से जूझ रही हमारी सरकार अपने पूंजीगत व्यय को एक सीमा से अधिक बढ़ा नहीं सकती। वहीं निजी क्षेत्र से निवेश उन्ही उद्योगों में हो सकता है जहां लाभ की पूर्ण संभावना है। देश के भीतर पूंजी की कमी के कारण ही हमें विदेशी निवेश पर भी निर्भरता रखनी पड़ती है। परन्तु जो समस्या बड़े उद्यमों की स्थापना में है वह सूक्ष्म, लघु एवं कुटीर उद्योगों में नहीं है। सूक्ष्म, लघु एवं कुटीर में तुलनात्मक रूप से कम पूंजी की आवश्यकता होती है। अतः पूंजी की कमी की समस्या का विकल्प श्रम केन्द्रित सूक्ष्म, लघु एवं कुटीर उद्योग ही है। इसके साथ ही सूक्ष्म, लघु एवं कुटीर उद्योगों की परियोजना पूरी होने की अवधि भी कम होती है जिसके कारण जोखिम की आशंका भी कम रहती है। ये दोनों ही तत्व लोगों के निवेश

हेतु उत्प्रेरक तत्व साबित हो सकते है। इसके अतिरिक्त भारत में अधिकतर लोग कम शिक्षित तथा अकुशल है जबकि बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों में रोजगार पाने के लिए उच्च शिक्षा, दक्षता इत्यादि की आवश्यकता होती है। हमारे देश में कार्यबल का 93 प्रतिशत हिस्सा असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है। इसका मुख्य कारण अशिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा का अभाव तथा प्रमाणित रूप से कौशल का ज्ञान न होना है। ऐसी स्थिति में निस्संदेह सूक्ष्म, लघु एवं कुटीर उद्योगों के माध्यम से ही ऐसे लोगों के लिए रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. कश्यप, जगन्नाथ कुमार, एवं सिंह नेहा, 2015, 'लघु एवं कुटीर उद्योग में रोजगार', कुरूक्षेत्र, वोल्यूम 63, अंक 12, पृष्ठ 30-34
2. चक्रवर्ती ए द्वीर, आई एंड इकाबुरा, एन, 1993, 'इंटर-ओर्गनाइजेशन ट्रांसफर ऑफ़ नालेज: एन एनालिसिस ऑफ़ पेटेंट साइटेशन ऑफ़ डिफेंरा फर्म,', आई ट्रिपल ट्रांजेक्शन ऑन इंजीनियरिंग मैनेजमेन्ट, 40, पृष्ठ 91-99
3. पांडा, अरूण कुमार, 2017, 'लघु एवं कुटीर उद्योगों का सशक्तिकरण', योजना, वर्ष 61, अंक 11, पृष्ठ 9-12
4. भारद्वाज अनिल, 2017, 'लघु एवं कुटीर उद्योग: वित्तपोषण में चुनौतियां', योजना, वर्ष 61, अंक 11, पृष्ठ 23-26
5. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट, 2016-2017
6. www.msmc.nic.in

भारतीय कला का अवलोकन

सम्पादक
डॉ० प्रेमलता कश्यप
डॉ० अर्चना चौहान

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना .... i-ii

आभार iii

प्राक्कथन (Foreword) iv

सम्पादक की कलम से v

पुस्तक अध्याय लेखक सूची .... vi-viii

1. भारतीय चित्रकला कलाकार की दृष्टि से कला का अंकीकरण — 01–08
   डॉ० प्रेमलता कश्यप
2. भारतीय चित्रकला में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् — 09–18
   डॉ० पूर्णिमा वशिष्ठ
3. भारतीय संगीत कला में वाद्य यंत्रों का विभाजन : एक अध्ययन — 19–26
   डॉ० अर्चना चौहान
4. चालुक्यकालीन कला: एक संक्षिप्त परिचय — 27–32
   शबाहत
5. भारतीय समाज के उत्थान में कला का योगदान — 33–38
   आशीष कुमार मिश्र
6. भारतीय मूर्तिकला में शिव का प्रतीकात्मक एवं सौन्दर्यात्मक अवलोकन — 39–46
   डॉ० अपर्णा
7. समकालीन कला में आध्यात्मिक प्रतीकों का अंकन — 47–54
   ममता सुयाल
8. प्रकृतिमूलक सृजनात्मक कला और कलाकार — 55–60
   डॉ० पुनीता शर्मा
9. भारतीय कला में रंगो का महत्व — 61–64
   डॉ० मृदुला त्यागी

07

समकालीन कला में आध्यात्मिक प्रतीकों का अंकन

ममता सुयाल

जो भी व्यक्ति समय की चेतना को आत्मसात करता है उसे समकालीन कहा जाता है। किसी भी स्थिति में समकालीनता को व्याख्यायित और परिभाषित करना अत्यंत कठिन है। इसके दो कारण हैं– पहला तेजी से बदलता हुआ समय, दूसरा उपभोक्तावाद में तब्दील होती हमारी संस्कृति और मनुष्य का निरंतर संवेदनहीन होना। विश्व की संस्कृतियों में मानव के विकास के साथ ही उसकी कला में भी समय–समय पर परिवर्तन आते रहे हैं, और आते रहेंगे। यह एक [illegible] स्वरूप है। अपनी कला और संस्कृति को एक दूसरे के सामने प्रस्तुत करना संस्कृति आमेलन की सहज प्रक्रिया है। चित्रकला के क्षेत्र में एक साथ एक समय में रचना करने वालों को समकालीन शब्द से संबोधित करते हैं। यह प्रवृत्ति वास्तव में तत्कालीन घटनाओं परिवर्तनों के आधार पर आती जाती है। समकालीन होने का अर्थ अपने अंतर्विरोधों को प्रस्तुत करना ही नहीं अपितु भविष्य को उज्जवल बनाने वाले कार्यों का निष्पादन करना भी है। इसलिए जो अपनी विरासत तथा संस्कृति को धारण करते हुए भविष्य की योजनाओं पर कार्य करे वह समकालीन कला कहलाती है।

"समकालीन कला को समझने के लिए आधुनिक समाज के विचार, संदेश, इच्छाएं आदि को समझना अत्यंत आवश्यक है। आधुनिकता सदैव

परंपरा का विरोध करती आई है तथा यह विरोध ही उसके ... आधार प्रदान करता है। आधुनिकता व्यक्ति के चिंतन पद से ... मानसिकता है जो अपने स्वरूप में सतत प्रगतिशील है इसलिए ... युग के प्रस्ताव भी आधुनिक रहे होंगे। आधुनिकता वस्तुतः वैज्ञानि... जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं चिंतन के विकास की सूचनाओं ... करती है।"

समकालीन कला में मूर्त तथा अमूर्त दोनों ही रूपों का नि... परंपरा और आधुनिकता के दौर में भारतीय समकालीन कला य... अपनी कृतियों में समावेशित करने का प्रयास लगातार कर रही है। ... कलाय लोककला तथा पश्चिमी कला का निश्चित रूप है। आधुनि... विभिन्न कलाकारों ने अपनी संस्कृति और परंपरा को गति दे... पारंपरिक लोकचित्रों का निर्माण किया। 19वीं सदी के भारतीय चित्र... रवि वर्मा का महत्व इसलिए है कि उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक ... अपने कलाकृति का विषय बनाया और यूरोपीय कला जगत की बा... भी अपनाया जो परंपरा और आधुनिकता को जोड़ने का प्रयास ... प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए बंगाल शैली के विभिन्न कलाकारों ने ... पौराणिक विषयों को अपनी विषयवस्तु बनाया तथा अजंता, एलोरा की चित्र... बनाकर अपने इतिहास को वर्तमान के साथ जोड़ने का प्रयास किया ... रॉय जैसे कलाकारों ने लोककला के स्रोतों को अपनी कला का आधा... समकालीन भारतीय कला धारा में प्रवाहित किया।

रविंद्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल द्वारा समकालीन कला में पु... किया गया। हुसैन, रजा, आरा और सुजा ने आधुनिक भारतीय ... पाश्चात्य कला के समरूप ला खड़ा किया। संतोष पारिकर, के वी ... विवान सुंदरम, वीरेंद्र डे जैसे कलाकारों ने ज्यामितीय रूपों द्वारा तांत्रि... का उदय भारतीय चित्रकला में किया।

समकालीन काल में अमूर्त कला एक संवेदनशील तथा मन... स्तर पर अवस्थित एक ऐसा क्षेत्र है जहां भौतिक संपन्नता कोई प्र... डाल पाती। संस्कृति की भौतिक सत्ता तो मात्र उपयोगिता और आर्थि... पर निर्भर है। जब सारे प्रयास भौतिक साधनों की ओर उन्मुख हो ... और आत्मसंतोष की कमी हो जाती है। इस कमी को पूर्ण करने के लि... धर्म की ओर मुड़ जाता है। कला पर धर्म का प्रभाव प्राचीन युग से ... युग तक रहा है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण भारतीय कला है। कला के इति...

...रित अनेक सुंदर कलाकृतियों का निर्माण हुआ। ... का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। धार्मिक ...कृतियों का निर्माण निरंतर होता आया है। समकालीन ... रूपों को अमूर्त तथा मूर्त रूप में चित्रित किया गया। ...कृतियों के अंतर्गत विभिन्न देवी–देवताओं के रूपों को ... किया गया। अमूर्त रूपों के अंतर्गत ज्यामितीय रूपों ... चित्रण किया गया। यह प्रतीक रूप ही लोककला तथा ... आधार बने।

...प्रतीकों का प्रयोग नवीन नहीं है। संभवतः कला से भी पूर्व ... चुकी थी। जो ध्वनि के रूप में अंतरिक्ष में विद्यमान थी। ... का आश्रय लेकर विकसित और पल्लवित हुई। भाषा ... दर्शन आदि सभी क्षेत्रों में प्रतीक विधि को अपनाया गया ... अर्थ को दर्शाने हेतु प्रतीकों का निर्माण किया जाता

... में भी कलाकारों द्वारा नित नए नए प्रतीकों का सृजन ... कला में निहित प्रतीक लिपि क्षेत्र में निहित प्रतीक ... हैं। कला के क्षेत्र में प्रतीकों का प्रयोग प्रत्यक्ष रूप ... विविध अर्थों को परिभाषित करने के लिए प्रतीकों की ... गया है। किसी स्थान की सभ्यता संस्कृति जाति का ... कला परंपरा में निहित प्रतीकों से होता है।

... लेकर आज तक की कला परंपरा में कुछ ऐसे प्रतीक रहें ... स्थान की सभ्यता संस्कृति का ज्ञान होता है। यदि हम ... पर एक दृष्टि डालें तो निसंकोच यह कह सकते हैं कि ... विकास तथा उदगम प्रतीकों के आधार पर ही संभव है। ... मनोभावों को व्यक्त करने के लिए प्रतीकात्मक चित्रों का ... जो हमें प्रागैतिहासिक काल की गुफाओं में देखने को मिलते ... सूर्य और चंद्र के प्रतीक रूप आज भी लोकमान्य हैं। भारतीय ... आदिकाल से कुछ बहुप्रचलित प्रतीक चले आ रहे हैं ... कलश व अनेक प्रकार के ज्यामितीय प्रतीक जिनका ... परिवर्तित रूप हमें आज भी कहीं थोड़ा कहीं अधिक देखने

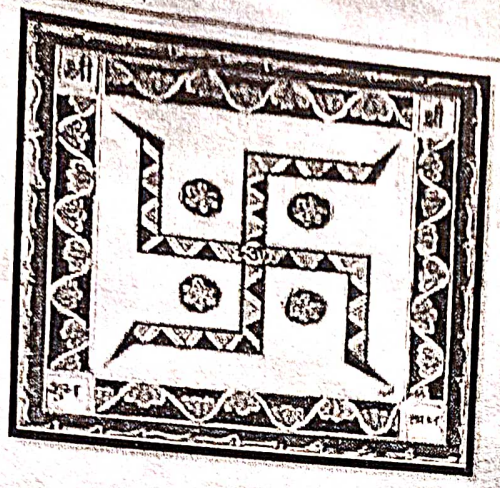

स्वास्तिक (मधुबनीकला)

स्वास्तिक एक ऐसा प्रतीक चिन्ह है जिसे मानव और ... सर्वोत्तम मांगलिक चिन्ह कहा जाता है।" स्वास्तिक पूजा का चलन आदि... संस्कारों से लेकर शैलचित्र, सिंधु घाटी की मुद्राओं, बौद्ध जैन तथा हि... के प्रतीक के रूप में मिलता है। इसके अतिरिक्त कल्पवृक्ष, कमल, चक्र, ... सूर्य चंद्र आदि के भी प्रतीक चिन्ह देखने को मिलते हैं।"

भारत में कला की उत्पत्ति प्रतीकों के माध्यम से हुई। प्रतीक भा... व्यक्त करने में कुशल होते हैं। प्रतीक की अपनी एक भाषा होती है। ... में भी प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिक पहलुओं ... प्रतीक एक चिन्ह के रूप में उपयोगी है। प्रतीक स्वयं में एक सांकेतिक... लिए हुए हैं । कला भाषा के समान ही अभिव्यक्ति का माध्यम है। दोनों... साधनों में अंतर है। प्रतीकों के माध्यम से हम अभिव्यक्ति कर पाते हैं... कलाओं में चिन्ह, प्रतीक, बिंब, आकार, गति तथा लय का प्रयोग किया जा... है। प्रतीकों की रचना केवल संसार में देखे गए रूपों के आधार पर ही ... होती बल्कि कलाकार लौकिक, अलौकिक तथा काल्पनिक रूपों के ... प्रतीकों की रचना करता है। प्रतीक अत्यंत प्रभावशाली होते हैं यह अत्यंत ... सरल और स्पष्ट होने के कारण मस्तिष्क पर देर तक अपना प्रभाव छोड़ते ... हिंदू धर्म में कई देवी देवताओं को प्रतीकों के रूप में ही पूजा जाता है ... के माध्यम से भी आकारों द्वारा उपासना की जाती है जो प्रतीक के रूप में ... हैं प्रतीकों में अपार शक्ति होती है वह ध्वनि के रूप में गुंजायमान होती ...

जिस प्रकार लिपि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की ओर परंपरागत ... में अग्रसारित होती है उसी प्रकार कला में प्रतीक भी परंपरागत रूप में ...

... कला की ओर अग्रसर हुए। प्रतीकों की महत्वता को ... ने नए प्रतीकों का सृजन भी किया एवं प्राचीन प्रतीकों ... भी प्रदान किया। "प्रतीक विश्वास एवं मान्यता का संकेत ...

... संस्कृति में मांगलिक कार्यों हेतु प्रतीकों का महत्व है। ... की संस्कृति वहां की कला को प्रभावित करती है। भारतीय ... की संस्कृति की झलक प्रतीकों के माध्यम से देखने को ... विभिन्न कर्मकांड में कुछ प्रतीक चिन्हों को विशेष रूप ... गया है जिसमें तिलक प्रमुख है। यह किसी मांगलिक कार्य ... एक रेखा के रूप में अंकित हो सांप्रदायिक संबद्धता को ... के लिए तिलक एक बिंदी या बिंदु के रूप में अंकित होता ... कलाकारों की कृतियों की विषयवस्तु रहा है। लक्ष्मण ... ने अपने चित्रों के विषय में बिंदु की रचना सर्वाधिक की

जम्मूरू गोपाल कृष्ण (लक्ष्मण गौड़)

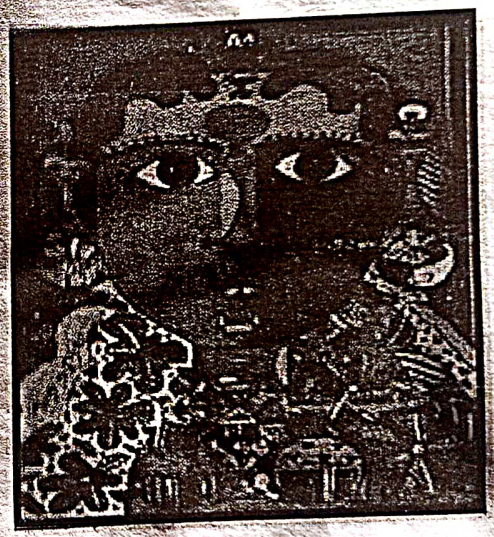

... बिंदुओं के साथ या बिना इनके, माथे पर तीन क्षितिज रेखाएं, ... या त्रिशूल की आकृति भी अंकित की जाती है। मुख्यतः प्रतीकों का ... तांत्रिक कला में सर्वाधिक देखने को मिलता है। भारतीय योगियों ने ... अमूर्त संकेतों या तंत्रों की कल्पना बहुत समय पूर्व कर ली थी।

गई। समयांतर आधुनिक चित्रकला का विकास हुआ और एक बार फिर तंत्र दर्शन ने कलाकारों को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। आधुनिक भारतीय चित्रकला के क्षितिज में अनेक कलाकारों का रुझान तंत्र कला की ओर हुआ है। तंत्र एक ऐसी पद्धति है जो हमारी सोई हुई आध्यात्मिक शक्ति को जगाती है। तंत्र ज्ञान के अनुसार, शिव और शक्ति, पुरुष एवं प्रकृति का योग ही इस सृष्टि का अंतिम सत्य है। तांत्रिक मंत्र, तंत्र और यंत्र का संयोग है। तंत्र और मंत्र विधि तथा सूत्र बताते हैं कि यंत्र आकृति का संकेत करते हैं। तंत्र दर्शन के अनुसार, "अंतर्मन में सोई हुई शक्तियों को हम तंत्र योग एवं साधना से सहज ही जगा सकते हैं। ऐसा करने से शरीर की सक्रिय शक्तियां शिव चेतना में प्रवेश करके हमारे ज्ञान का विस्तार करती हैं।" चित्रकला का उपासक मात्र कलाकार ना होकर एक साधक है जो अपनी कला के जरिए दर्शक को सत्य एवं आत्मज्ञान के मार्ग की ओर प्रवृत्त करता है।

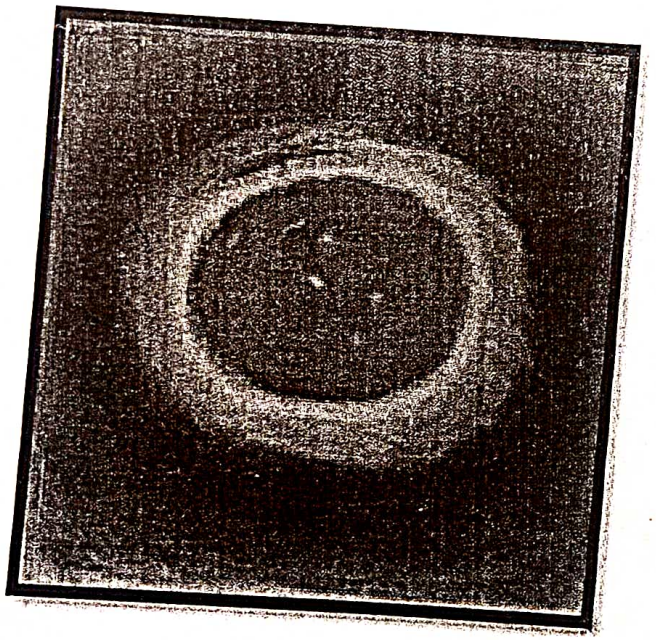

शीर्षक विहीन (विरेन दे)

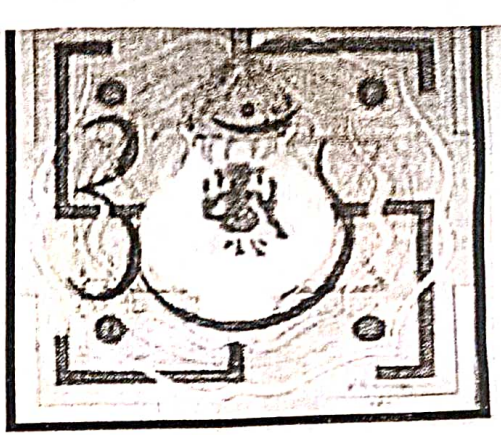

शीर्षकविहीन (पी. टी. रेड्डी)

शीर्षक विहीन (रिजवाना ए मुंडेवादी)

जी आर संतोष, वीरेन डे, होमी पटेल, प्रभाकर बर्वे, पी ० टी ० रेड्डी, परिदासन, रेडप्पा नायडू, स्वामीनाथन, गौतम बघेल तथा अश्विन मोदी आदि कलाकारों ने स्वयं को तंत्र कलाकार के रूप में स्थापित किया है। इसके साथ ही अनेक नए कलाकार रिजवाना, मुंद वेदी, पूजा ग्रोवर, जी. आर. संतोष, विमल कुमार ने भी तंत्र कला के क्षेत्र में प्रवेश किया है। तंत्र कला एक ओर हमें स्त्री–पुरुष, शिव और शक्ति के संबंधों को आत्मसात करने का अवसर देती है तो दूसरी ओर हमारी आध्यात्मिक प्रवृत्तियों को विकसित करने की ताकत भी देती है।

समकालीन काल में तांत्रिक कला में ॐ प्रतीकात्मक रूप में दिखाई दिया। कई कलाकारों ने अमूर्तकला के रूपों में इसका प्रयोग किया। शिव के प्रतीक के रूप में इसका प्रयोग समकालीन कलाकृतियों में अधिक देखने को मिलता है। चित्रकला के साथ–साथ मूर्तिकला एवं वास्तुकला में भी ॐ का

स्वरूप देखने को मिलता है। प्रतीक के रूप में ऊँ का प्रयोग कल
कलाकार की साधना का प्रतीक है। शिव के साधक रूप को प्रस्तुत
ऊँ का चित्रण किया है। कला जगत में आध्यात्मिकता की अत्यधिक
के कारण आध्यात्मिक प्रतीकों का प्रयोग अधिक किया जा रहा है
कारण स्वास्तिक, चक्र, त्रिशूल तथा ऊँ के प्रतीकों का अंकन
कलाकारों द्वारा देखने को मिलता है।

कला के अंतर्राष्ट्रीय बाजार में आध्यात्मिक एवं तांत्रिक
अत्यधिक मांग है। भारतीय कला के तांत्रिक रूप को अधिक प्रभावश
जाता है। ऊँ सृजन का सूचक होने के कारण अपना प्रभाव कल
छोड़ता है। तांत्रिक कला तथा अमूर्तकला की कल्पना ऊँ के प्रतीक
असंभव सी जान पड़ती है। तांत्रिक कला में ऊँ के स्वरूप को चित्रि
के लिए प्रतीक की आवश्यकता होती है। विभिन्न प्रतीकों ने भारतीय
नया आयाम दिया। ये प्रतीक दर्शक के मस्तक पटल पर अपनी छा
है जो सदा के लिए अमर हो जाती है। प्रतीक भारतीय कला का
आभूषण है जो कलाकर्तियों के सौन्दर्य को निखारता है।

संदर्भ सूची

- विरंजन, राम (2003)– समकालीन भारतीय कला, निर्मल इं
कुरुक्षेत्र, पृष्ठ–7।
- भट्टनागर, आर. के. (1985)– समकालीन कला, ललितकल
पत्रिका, अंक 4, ललितकला अकादमी, नई दिल्ली पृष्ठ 3
- Singh, Priyanka. Introduction of Narendra Sri
Symbolic Art, Journal of advances and scholarly re
in applied education; (IASRAE), vol:16/Issue
w1029070/JASRAE, Publisher-Ignited minds
Mar2019
- Mago, Pramnath k. (2000)- Contemporary art in
perspective, National Book Trust, India, New Delhi.
- जोशी, ज्योतिष (2002) समकालीनकला, ललितकला अका
अंक 23, ललितकला अकादमी, नई दिल्ली पृष्ठ 31।
- Gupta, S.k and Das N.k, Fundamentals of Indian ar